अध्याय – द्वितीय

संबंधित शोध साहित्य का पुनरावलोकन

अध्याय–द्वितीय

संबंधित शोध साहित्य का पुनरावलोकन

2.01 भूमिका

2.02 पुनरावलोकन का महत्व

2.03 पूर्व शोध अध्ययन

2.01 भूमिका

साहित्य का पुनरावलोकन प्रत्येक वैज्ञानिक, अनुसंधान की प्रक्रिया में एक महत्वपूर्ण कदम है । समस्या से संबंधित साहित्य का पुनरावलोकन अनुसंधान का प्राथमिक आधार तथा अनुसंधान के गुणात्मक स्तर के निर्धारण में एक महत्वपूर्ण कारक है । प्रत्येक प्रकार के वैज्ञानिक अनुसंधान में चाहे वह भौतिक विज्ञान का क्षेत्र हो या सामाजिक विज्ञान का साहित्य का पुनरावलोकन एक अनिवार्य चरण है ।

2.02 पुनरावलोकन का महत्व

⇒ किसी शोध की पुनरावृत्ति की संभावना समाप्त करता है ।

⇒ समस्या चयन में सहायक होता है ।

⇒ शोध की रूपरेखा तय करने में सहायक होता है ।

⇒ शोध हेतु आवश्यक दिशा निर्देश प्रदान करके अनुसंधानकर्ता की अभिप्रेरणा उल्लास प्रदान करता है ।

⇒ शोध उपकरण उपलब्ध करवाकर समय की बचत करता है ।

2.03 पूर्व शोध अध्ययन

⇒ जोन्स तथा उनके सहयोगियों (1973) ने शैक्षिक अवसरों की समानताओं व अपने अध्ययन का विषय बनाया तथा निष्कर्ष प्रापत हुआ कि बालकों व पारिवारिक एवं आर्थिक अवस्था ही उन्हें समान अवसर का लाभ प्राप्त कर में बाधक है ।

⇒ मेनन (1973) ने अपने शोध निष्कर्ष में पाया कि अधिक या कम उपलब्धि सामाजिक आर्थिक स्थिति से प्रभावित होती है ।

⇒ कर्ल ए. वर्गर और पिन्टर्व (1984) ने ''विज्ञान प्रकिया द्वारा कौशल प्राप्ति और टास्क के प्रमाण पर शोधकार्य किया'' इन्होंने अपने शोधकार्य में कक्षा पहली के 22 तीसरी के 44, और कक्षा छटवी में 33 छात्रों का चयन किया । इन छात्रों की शैक्षिक योग्यता सामान्य स्तर की है । इस शोध से निष्कर्ष निकला कि छात्रों के निष्पादन को आयु और उपस्थित सूचनात्मक परिस्थितियॉ प्रभावित करती है । छोटे बालकों का निष्पादन बडों से कम है ।

⇒ पाल जें. जरमन (1996) ने ''कक्षा सातवी के बच्चों का विज्ञान प्रकिया में कौशल और प्रयोग रचना के प्रति अनुकिया जानने के लिए शोध किया । ''इससे उन्होंने निष्कर्ष निकाला कि 84.9% छात्र ही स्वतंत्र चरों को व्यवस्थित कर सकें तथा 80% छात्रों ने परिकल्पना नहीं लिखी । इस प्रकार निष्कर्ष निकला कि निष्पादन बहुत कम है ।

⇒ माथुर (1972) के ''स्कूल अचीवमेन्ट एण्ड इन्टेलीजेन्स इन रिलेशन टू सम इकोनोमिक बैक ग्राउण्ड फैक्टर्स'' शीर्षक के अन्तर्गत निम्न निष्कर्ष थे । बुद्धि शैक्षिक उपलब्धि तथा पारिवारिक स्थिति के बीच परस्पर घनिष्ठ संबंध है ।

⇒ शुक्ला (1984) द्वारा अचीवमेन्ट ऑफ प्राइमरी स्कूल चिल्ड्रन इन रिलेशन टू देयर सोसियो इकोनोमिक स्टेट्स एण्ड फेमिली साइज के अन्तर्गत किए गए शोध के निष्कर्ष थे कि सामाजिक, आर्थिक, शैक्षिक उपलब्धि से धनात्मक रूप से सह-संबंधित है ।

⇒ सिंह, मेहरबान (1998) ने ''कक्षा-4 के सामाजिक विज्ञान के प्रथम अध्याय की सरल एवं कठिन अवधारणाओं का अध्ययन'' किया जिसके प्रमुख निष्कर्ष थे कि ग्रामीण क्षेत्र के विद्यार्थियों एवं शहरी क्षेत्र के विद्यार्थियों में कठिन अवधारणाओं में कोई सार्थक अंतर नहीं है ।

⇒ पाण्डे (1981) ने विद्यार्थियों में शैक्षणिक प्राप्ति को प्रेरित करने के वातावरण के प्रभाव का एक कारक के रूप में अध्ययन किया । उन्होंने य निष्कर्ष निकाला कि शहरी वातावरण ग्रामीण वातावरण की तुलना में शैक्षणिव प्रापित के लिए अधिक उपयुक्त है । पुरी ने बताया कि वातावरण सुविधाअ का प्रभाव सामान्य शैक्षणिक प्राप्ति एवं अंग्रेजी भाषा में प्रापित दोनों के लि महत्वपूर्ण था ।

⇒ सुब्रमण्यम (1982) ने प्राथमिक शाला के बच्चों के पठन बोध से कुछ सह संबं नामक विषय पर शोधकार्य किया एवं यह निष्कर्ष निकला कि ग्रामीण क्षेत्रों व प्राथमिक शालाओं के बच्चों में पठन, उपलब्धि का स्तर बहुत कम है ।

⇒ कु. वंदना बाजपेयी (1987) ने क्षेत्रीय शिक्षा महाविद्यालय में एम.एड. स्तरी शोध के अन्तर्गत कक्षा पर्यावरण शैक्षिक आत्मधारणा तथा विज्ञान विषय शैक्षिक, उपलब्धि में सह–संबंध का अध्ययन किया और पाया कि कक्ष पर्यावरण तथा शैक्षिक उपलब्धि में धनात्मक संबंध है ।

⇒ एण्डरसन (1971) ने अपने परीक्षण में बताया कि विद्यार्थियों की कम शैक्षिव उपलब्धि कुछ हद तक विद्यालय पर निर्भर करती है, क्योंकि विद्यालय पाठयक्रम पूर्ण करने के उददेश्य से पढाई की गति तीव्र होती है ।

⇒ भाटिया कुसुम (1992) आइडेन्टीफिकेशन एण्ड रिमेडी ऑफ डिफीकल्टीस इ लर्निंग फॅक्शन विथ प्रोग्रामड इंस्ट्रकशन मटेरियल इसके अलावा 1997 में एव अध्ययन शिक्षकों के अवधारणात्मक कठिनाइयों के निदान से संबंधित है ।

⇒ ललिता और शारदा एम. (1997) एमपावरमेन्ट ऑफ टीचर्स टू ओवरक हार्डस्पाट इन ई.वी.एस. 2 यूसिंग एक्टीविर्य बेस्ड माडयूल्ड एट द प्राइमर स्टेज ।''

⇒ राजौरिया मंजु (1998) कक्षा पॉच में अध्ययनरत विद्यार्थियों की पर्यावरण अध्ययन की अवधारणात्मक कड़िनाइयों का अध्ययन।'' इसका निष्कर्ष यह था कि छात्र एवं छात्राओं के मध्य आंशिक सह–संबंध है ।

⇒ पानकर, चन्द्रशेखर (1998) ''कक्षा–4 की विज्ञान विषय की अति कठिन अवधारणों का विश्लेषण'' जिसके आधार पर यह निष्कर्ष है कि ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थियों के असहसंबंधित प्रतिशतों में सार्थक अंतर है, चूँकि अवधारणा की सरलता एवं कठिनता उनके शैक्षिक उपलब्धि को कहीं न कहीं प्रभावित करती है । अतः उपलब्धि एवं सामाजिक, आर्थिक स्थिति में संबंध स्थापित करने वाले शोध साहित्य का पुनरावलोकन किया गया ।